27.01.2021

श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर में श्रीनाथ भवन का लोकार्पण समारोह

- अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन द्वारा निर्मित श्रीनाथ भवन के लोकार्पण कार्यक्रम के अवसर पर भगवान श्रीनाथ जी की इस पवित्र-पावन भूमि पर आकर मैं खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। भगवान श्रीनाथ जी का यह स्थान आस्था और विश्वास का एक प्रमुख केंद्र है जिसकी ख्याति देश-विदेश तक फैली हुई है। यह इस पावन धाम की अलौकिक भव्यता का प्रतीक है।

- साथियो, मेवाड़ की धरती महाराणा प्रताप की वीरता और राणा कुंभा के शौर्य की धरती है। यहां हमें भगवान एकलिंग जी का आशीर्वाद भी मिलता है और कुंभलगढ़ और हल्दी घाटी से देश को युवाओं को मातृभूमि की रक्षा और स्वाभिमान के लिए स्वयं को बलिदान करने की प्रेरणा भी मिलती है।

- साथियो, भगवान शिव व मां पार्वती द्वारा वरदान प्राप्त माहेश्वरी समाज का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। भगवान शिव की आराधना के साथ-साथ माहेश्वरी समाज मानव कल्याण तथा सेवा के कार्य में हमेशा अग्रणी रहा है।

- हमारे पूर्वजों से सीखते हुए हमने पीढ़ी दर पीढ़ी सेवा, त्याग और समाज के प्रति समर्पण की भावना को अपनाया है। इस कारण सेवा की भावना हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग है। सेवा और समर्पण की इसी भावना के कारण ही माहेश्वरी समाज को आज सम्पूर्ण भारत में प्रतिष्ठित स्थान मिला है।

- इन्हीं गुणों से प्रेरणा प्राप्त कर माहेश्वरी बंधु मानवता की सेवा, समाज के उत्थान और देश की उन्नति में सकारात्मक योगदान दे रहे हैं। हमें हमारी पूर्वजों के उन्हीं संस्कारों को आगे बढ़ाना है, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन तथा देश के विकास में इसी तरीके से सक्रिय भागीदारी निभानी है।

- आज हम देख रहे हैं कि अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन द्वारा सम्पूर्ण देश में जहां कहीं भी हमारी धार्मिक आस्था के केन्द्र हैं वहां सम्पूर्ण समाज की सेवा के लिए इसी तरीके का सेवा सदन बनाने का काम किया जा रहा है। इस संस्था ने पुष्कर, वृंदावन, हरिद्वार, बद्रीनाथ, जतीपुरा, रामदेवरा और चारभुजा में श्रीनाथ भवन बनाया है, जो समाज के हर वर्ग के लोगों के काम आते हैं।

- यह परम्परा भी हमने अपने पूर्वजों से ही सीखी है। आप पुराना जमाना याद करें, जब आवागमन के साधन सुलभ नहीं थे, तब यात्रियों के ठहरने के लिए जगह-जगह सराय व धर्मशालाएं बनवाई गईं, जो आज भी देश के अंदर मौजूद हैं।

- हमने अन्य समाजों की भी अच्छी सेवाओं को अपनाया। भूखों के लिए लंगर लगाना सिख समाज और सिंधी समाज की संस्कृति रही है। हमने उनसे भी सीखा और इस सेवा को अपनाया। इसी तरह अस्पताल और विद्यालय भी स्थापित किए गए जो जरूरतमंदों को सस्ता उपचार और उत्तम शिक्षा सुलभ करवा रहे हैं।

- साथियों, भारतीय संस्कृति में सेवा और समर्पण की भावना के साथ सभी समाजों ने सामूहिक प्रयासों से अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हुए देश को आगे बढ़ाया है।
- समाज और देश के सामने जब भी कोई चुनौती आई हर वर्ग अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने को आगे आया।
- मुझे याद आता है जब धर्मयुद्ध में महाराणा प्रताप पर जब विपत्ति आई तो उनकी सहायता के लिए भामाशाह जी आगे आए और महाराणा प्रताप को सम्पूर्ण सहायता प्रदान की।
- समय, काल और अवधि भले ही बदलती गई, लेकिन समाज व देशहित के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने की यह संस्कृति आज भी हमारे यहां जीवंत है।
- हम जो भी धन अर्जित करते हैं वह सेवा के लिए समर्पित होना चाहिए, यह हमारे भामाशाहों ने करके दिखाया है। जब भी जरूरत पड़ी है, भामाशाहों ने समाज की सहायता की है।
- कोरोना इसका ताजा उदाहरण है, हमने देखा कि जब पूरा विश्व कोरोना संकट का सामना कर रहा था तब सभी समाजों ने इस संकट का सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ सामना किया।
- जहां भी जिस व्यक्ति ने, संगठन ने, संस्था ने, समाज ने लोगों के अभाव देखे, मुसीबतें देखीं, कठिनाइयां देखी, वहां सामूहिक प्रयासों से उनके अभावों को दूर किया, उनकी मुसीबतों को दूर किया और इस महामारी की पीड़ा को कम करने में अहम भूमिका निभाई।
- आप पुराने समय को भी याद करें, जब भी बाढ़, तूफान या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा आती थी तो सारा समाज एक हो जाता था। छोटे-बड़े का भेद छोड़ सब संकट का सामना करने में एक-दूसरे की सहायता करते थे।
- यही वह परम्पराएं हैं जो हमने अपने पूर्वजों से सीखीं हैं और उन्हें आज भी पूरी सदाशयता के साथ निभा रहे हैं। यह सब हमारे समाजों की सामाजिक प्रतिबद्धता के उदाहरण ही तो हैं।
- आज हमने इसी संस्कृति को आगे बढाने का काम किया है। सेवा, त्याग और तपस्या जो हमारे जीवन का हिस्सा होना चाहिए, आज हमने उसे प्रदर्शित किया है।
- मुझे आशा है हम सब इसी तरह मानवता की सेवा को अपना परम लक्ष्य मानते हुए हर चुनौती और कठिनाई का मुकाबला एकजुट होकर करेंगे। मानव सेवा ही माधव सेवा है, इस भावना से अपने संकल्पों को पूरा करेंगे। मैं इस मौके पर उन सभी दानवीरों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस भवन को बनाने में अपनी ओर से सहयोग किया।
- धन्यवाद, जयहिन्द!!!